

रॉबर्ट वानॉय, फ़ाउंडेशन ऑफ़ प्रोफेसी, व्याख्यान 4

भविष्यवक्ताओं को संदर्भित करने के लिए उपयोग किए जाने वाले शब्द जारी

इ। नबी - नबी

हम यहां सिर्फ भविष्यवाणी, यानी भविष्यवक्ताओं के संदेश और *नबी शब्द*, जिसका अर्थ है "पैगंबर" के बीच संबंध के बारे में बात कर रहे थे। मैं जो कह रहा हूँ वह यह है कि दोनों बहुत निकट से जुड़े हुए हैं। भविष्यवक्ता के शब्द, भविष्यवाणी, वास्तव में ईश्वर के शब्द हैं और यह भविष्यवाणी हो भी सकती है और नहीं भी। दूसरे शब्दों में, भविष्यवाणी ईश्वर का एक शब्द है जो *नबी शीर्षक के साथ अच्छी तरह से फिट बैठता है*। जैसा कि उनमें से कुछ उद्धरणों ने बताया, यूनानी *भविष्यवक्ताओं के साथ*, यह वास्तव में भगवान के लिए बोल रहा है। यह मानवीय शब्दों का सार नहीं है; यह इतना अधिक पूर्वानुमानित नहीं है जितना कि यह आगे से बताया जा रहा है। उस भविष्य कथन में कुछ भविष्यवाणियाँ शामिल हो सकती हैं लेकिन भविष्यवाणी क्या है इसका सार भविष्यवाणी नहीं है।

एफ। रोह - द्रष्टा

आइए दूसरे शब्द पर चलते हैं और वह है *रोएह*। यह वास्तव में *ra'ah का एक सहभागी रूप है*, देखने के लिए। इसका अनुवाद "द्रष्टा" किया गया है। अब जैसे ही आप उस शब्द पर आते हैं, और उस पर साहित्य को देखते हैं तो आप पाएंगे कि ऐसे लोग हैं जो यह तर्क देने का प्रयास करते हैं कि *नबी* और *रोएह* मूल रूप से दो अलग-अलग प्रकार के लोग थे। दूसरे शब्दों में, आप *रोएह* और *नबी के बीच अंतर कर सकते हैं*, और यह कि बाद के समय में ही दोनों शब्द अधिक पर्यायवाची बन गए।

1. मेसोपोटामिया से मूह और बारू

एक विद्वान, उनका नाम उतना महत्वपूर्ण नहीं है, लेकिन मैं आपको दे दूँगा, अल्फ्रेड हलदर ने तर्क दिया कि आप कुछ मेसोपोटामिया भाषाओं में "भविष्यवक्ताओं" को नामित करने में वही अंतर पाते हैं जो आप पुराने नियम में पाते हैं। मेसोपोटामिया में कुछ लोग हैं जिन्हें *मूह* और *बारू* कहा जाता है। हलदर ने जो तर्क दिया वह यह था कि *माहू हिब्रू नबी* के समान था और *बारू हिब्रू*

रोहके समान था। तो अक्कादियन मेसोपोटामिया ग्रंथों में इसके ये दो पदनाम हैं और उन्होंने कहा कि इज़राइल में समतुल्य *माहू* और *नबी* और *बारू* और *रोह के बीच* है। अब, मेसोपोटामिया में *महू* और *बारू* एक जैसे थे कि उन दोनों का काम यह समझना था कि ईश्वर की इच्छा क्या है और फिर उसे अन्य लोगों को बताना था। लेकिन *महू* और *बारू* में एक महत्वपूर्ण अंतर था। *महू* को सीधे देवताओं से संदेश प्राप्त हुआ और उसने परमानंद की स्थिति में ऐसा किया। तो, *महू* एक परमानंद था और जब वह उस परमानंद की स्थिति में था, तो उसे एक देवता से एक संदेश मिलता है, जिसे वह फिर दूसरों तक पहुंचाता है। वह ऐसा तब करता है जब वह अभी भी मन की आनंदमय स्थिति में होता है।

हालाँकि *बारू* अलग था / *बारू* को संदेश अप्रत्यक्ष रूप से बाह्य माध्यमों से प्राप्त हुआ। दूसरे शब्दों में, *बारू* वह व्यक्ति था जो ज्योतिषीय संकेत पढ़ता था या विभिन्न प्रकार के शगुन पढ़ता था। *बारू* ने *भगवान की इच्छा को निर्धारित करने* के तरीकों में से एक बलि चढ़ाए गए जानवरों के जिगर की जांच करना और जिगर की संरचना को देखना था। जिगर के विभिन्न विन्यासों के अलग-अलग महत्व होते हैं और वह इस तरह से भगवान की इच्छा निर्धारित करेगा या वह पानी पर तेल डालेगा और देखेगा कि किस प्रकार का पैटर्न विकसित हुआ है और उससे कुछ पढ़ेगा या बहुत कुछ डालेगा - इच्छा निर्धारित करने के विभिन्न बाहरी साधन ईश्वर।

2. ईश्वर की इच्छा निर्धारित करने के बाहरी साधन

अब हलदर जो करने की कोशिश कर रहे हैं वह यह है कि जिस तरह मेसोपोटामिया में उनके परमानंद और उनके *बारू* पुजारी थे, उसी तरह इज़राइल में भी *नबी* और *रोह के बीच अंतर पाया जा सकता है*। *नबी* वह परमानंद था जिसे यह संदेश सीधे देवता से प्राप्त हुआ था। रोह वह व्यक्ति था जो बाहरी रूप से जानकारी प्राप्त करता था और फिर उसे दूसरों तक पहुँचाता था। अब यह एक दिलचस्प सिद्धांत है। समस्या यह है कि यदि आप बाइबिल के आंकड़ों को देखें तो यह बिल्कुल स्पष्ट हो जाता है कि बाइबिल का डेटा पैटर्न में फिट नहीं बैठता है। यहां आपके पास कहीं और से एक पैटर्न है जो पवित्रशास्त्र पर थोपा गया है और शास्त्र संबंधी डेटा की विशिष्टताओं को पहले से ही पूर्वकल्पित पैटर्न में मजबूर किया गया है। उदाहरण के लिए, शमूएल को "द्रष्टा" कहा

जाता है 1 शमूएल 9:11, लेकिन उसने परमेश्वर की इच्छा निर्धारित करने के लिए बाहरी साधनों से काम नहीं किया।

अब आगे बढ़ने से पहले मुझे बाहरी तरीकों से ईश्वर की इच्छा निर्धारित करने के इस व्यवसाय के बारे में कुछ और कहने दीजिए। इसे बाइबल से पूरी तरह बाहर नहीं रखा गया है। याद रखें कि महायाजक के वस्त्र में ऊरीम और तुम्मीम होता था और वह ऊरीम और तुम्मीम के उपयोग के माध्यम से भगवान की इच्छा निर्धारित कर सकता था। जब आप दाऊद के समय में आते हैं और जब शाऊल ने नोब में याजकों का सफाया कर दिया था, तब एब्यातार भाग गया और वह दाऊद के पास एपोद ले आया और अगले कुछ अध्यायों में आप दाऊद को यह कहते हुए देखते हैं, "मेरे लिए एपोद लाओ" और फिर वह प्रश्न पूछता है प्रभु की। "मुझे इस जगह जाना चाहिए या नहीं?" और प्रभु ने कहा, "हाँ, जाओ"। "क्या मैं विजयी होऊंगा?" और प्रभु ने कहा, "हाँ, तुम करोगे," या "नहीं, तुम नहीं करोगे।" बाइबिल सामग्री के माध्यम से वैध तरीके से बाहरी साधनों का उपयोग किया गया था। हालाँकि, जो व्यक्ति बाहरी साधनों का उपयोग कर सकता है उसे कभी भी *रोह नहीं कहा जाता है*। एब्यातार जिसके पास ऊरीम और तुम्मीम की रखवाली थी, वह याजक था; वह *रोह* नहीं था। इसलिए यह इस श्रेणी में फिट नहीं बैठता।

आपके पास ऐसे व्यक्तियों का संदर्भ है जिन्होंने ईश्वर की इच्छा निर्धारित करने के लिए बाहरी घटनाओं का उपयोग किया। लेकिन दिलचस्प बात यह है कि उन्हें कभी भी "द्रष्टा" नहीं कहा जाता। उन्हें कभी भी *ro'eh* शब्द से निर्दिष्ट नहीं किया जाता। उन्हें दैवज्ञ, जादूगर, भविष्यवक्ता या जादूगर कहा जाता है। यदि आप व्यवस्थाविवरण 18:10 को देखते हैं, उस अनुच्छेद में जो वर्णन करता है कि भविष्यवक्ता क्या होगा और भगवान भविष्यवक्ता के माध्यम से कैसे बात करने जा रहे हैं, तो आप वहाँ पढ़ते हैं, "तुम्हारे बीच कोई ऐसा न हो जो अपने बेटे या बेटी को बलिदान करता हो अग्नि, जो भविष्यवाणी या जादू-टोना करता है, शगुन की व्याख्या करता है, जादू-टोना करता है या जादू-टोना करता है, जो एक माध्यम है, एक प्रेतात्मवादी है, जो मृतकों से परामर्श करता है। जो कोई ये काम करता है वह यहोवा की दृष्टि में घृणित है।" प्रभु उस चीज़ की निंदा कर रहे हैं जो इन *ब्रू* पुजारियों ने मेसोपोटामिया में किया था, जिगर से या ज्योतिषीय घटनाओं से या जो भी हो, शगुन देखना। वह कुछ ऐसा था जो इस्राएलियों के लिए वर्जित था।

3) 1 सैम. 9:9

अब, एक श्लोक है जो मुझे लगता है कि शिक्षाप्रद है, हालाँकि यह एक श्लोक भी है जो बहुत सारे प्रश्न उठाता है। लेकिन 1 शमूएल 9:9 पुराने नियम में *रोएह* और *नबी* के उपयोग के बीच संबंध के प्रश्न के संबंध में शिक्षाप्रद है। इसमें लिखा है, "पहले इसराइल में अगर कोई आदमी ईश्वर से पूछने जाता था, तो वह कहता था, 'आओ, हम द्रष्टा के पास चलें, *रोह*, क्योंकि आज के भविष्यवक्ता को द्रष्टा कहा जाता था।" " आज के *नबी*, पैगम्बर को *रोह*, द्रष्टा कहा जाता था।" अब वह श्लोक, यदि आप एनआईवी को देख रहे हैं, तो आप इसे कोष्ठक में देखेंगे। यह एक कोष्ठक कथन है जो श्लोक 8 के बाद डाला गया है। यदि आप बड़े संदर्भ को देखें, तो मुझे लगता है कि आप यह निष्कर्ष निकालेंगे कि यह वास्तव में श्लोक 11 के बाद श्लोक 8 के बाद की तुलना में बेहतर फिट बैठता है। आप देख सकते हैं कि यह वह जगह है जहां शाऊल अपने पिता की तलाश कर रहा है खोए हुए मवेशी और वह उन्हें ढूँढ नहीं सकता। उसका नौकर कहता है, "वहाँ एक साधु है, हम जाकर उससे क्यों नहीं पूछते?" वह पद 8 में ऐसा कहता है। नौकर ने कहा, "देखो, मेरे पास एक चौथाई शेकेल चाँदी है। मैं इसे परमेश्वर के जन को दूँगा ताकि वह हमें बताये कि हमें क्या रास्ता अपनाना है।" श्लोक 9 को फिलहाल छोड़ दें। शाऊल ने अपने नौकर से कहा, 'अच्छा,' परन्तु वे अब भी गदहों को न पा सके, इसलिये वे उस नगर की ओर निकल पड़े जहां परमेश्वर का भक्त था। जब वे पहाड़ी पर चढ़कर शहर की ओर जा रहे थे तो उनकी मुलाकात कुछ लड़कियों से हुई जो पानी भरने के लिए बाहर आ रही थीं। उन्होंने उनसे पूछा, 'क्या द्रष्टा यहाँ है?' फिर आपको *रोह* शब्द का उपयोग मिलता है। "क्या द्रष्टा यहाँ है?" और, आप देखते हैं, श्लोक 9, फिर, यदि आप इसे श्लोक 11 के बाद वहाँ रखते हैं, "पूर्व में इज़राइल में यदि कोई व्यक्ति भगवान से पूछताछ करने जाता था तो वह कहता था, 'आओ, हम द्रष्टा के पास चलें' क्योंकि भविष्यवक्ता उस दिन को द्रष्टा कहा जाता था।" अब कई लोग जो सोचते हैं कि श्लोक 9 मूल पाठ का हिस्सा नहीं था। यह शायद पाठ के हाशिये में एक व्याख्यात्मक शब्दाडंबर था। प्रसारण की प्रक्रिया में किसी बिंदु पर, इसे पाठ में डाल दिया गया लेकिन उन्होंने इसे गलत स्थान पर डाल दिया। इसे श्लोक 11 के बाद रखा जाना चाहिए था ताकि यह समझाया जा सके कि द्रष्टा क्या है, न कि श्लोक 8 के बाद जहाँ यह

वास्तव में इतनी अच्छी तरह से फिट नहीं बैठता है। मुझे लगता है कि यह निष्कर्ष निकालना उचित है कि यह संभवतः एक व्याख्यात्मक शब्दावली है, मूल पाठ का हिस्सा नहीं। लेकिन महत्वपूर्ण बात जो यह हमें बता रही है वह यह है कि भविष्यवक्ता और द्रष्टा के बीच कोई आवश्यक अंतर नहीं है। यह भाषाई प्रयोग का मामला है. "आज के भविष्यवक्ता को द्रष्टा कहा जाता था।" "द्रष्टा" शब्द "पैगंबर" से भी पुराना है और बाद के समय में, *नबी* या "पैगंबर" शब्द अधिक सामान्य शब्द था और "द्रष्टा" शब्द काफी पुरातन भाषा बन गया, आपको एक स्पष्टीकरण की आवश्यकता है ताकि कोई भ्रम न हो .

मुझे लगता है कि शायद यहाँ यही चल रहा है, लेकिन अगर आप इसके बारे में सोचते हैं और इसे इसके बड़े बाइबिल संदर्भ में रखते हैं, तो यह कुछ अन्य प्रश्न उठाता है। हम इस टिप्पणी को कब दिनांकित करेंगे? यह प्रश्न इसलिए महत्वपूर्ण हो जाता है क्योंकि शमूएल के काफी समय बाद भी भविष्यवक्ताओं को द्रष्टा ही कहा जाता था। उदाहरण के लिए, आप इसे यशायाह में पाएंगे, "द्रष्टा" शब्द का उपयोग। यह भी हैरान करने वाली बात है कि *नबी* शब्द का प्रयोग सैमुअल के समय से बहुत पहले किया गया था। उत्पत्ति 20, श्लोक 7 में इब्राहीम को *नबी* कहा गया था। और *नबी का* उपयोग संख्याओं में किया जाता है, इसका उपयोग व्यवस्थाविवरण में किया जाता है, इसका उपयोग न्यायाधीशों में किया जाता है। वास्तव में, 1 शमूएल 3:20 में शमूएल को स्वयं *नबी कहा गया है*। तो फिर सवाल यह उठता है कि यदि "पैगंबर" शब्द का प्रयोग सैमुअल के समय से पहले किया जाता है, तो यह कैसे कहा जा सकता है कि जिसे बाद में पैगंबर कहा गया वह सैमुअल के समय में द्रष्टा कहा जाता था? अब कुछ लोग कह सकते हैं, "यहां एक स्पष्ट प्रमाण है कि पुराने नियम के सभी पाठ जिनमें "पैगंबर" शब्द का उपयोग किया गया है, सैमुअल के समय के बहुत बाद के हैं।" क्या यह एक वैध निष्कर्ष है?

आइये हिब्रू पाठ पर चलते हैं। हिब्रू में है, "आज के भविष्यवक्ता को पहले द्रष्टा कहा जाता था।" अब उसका अनुवाद थोड़ा कठिन है. ध्यान दें कि एनआईवी क्या करता है - वाक्यांश "क्योंकि आज का भविष्यवक्ता" इसे एक प्रकार की रचना के रूप में लेता है: आज का भविष्यवक्ता। "उन्हें द्रष्टा कहा जाता था।" किंग जेम्स और NASB क्रिया को दोहराते हैं। "क्योंकि वह जो अब भविष्यवक्ता, वा आज का भविष्यवक्ता कहलाता है, पहिले द्रष्टा कहलाता था।" हिब्रू शास्त्र में

आपके पास केवल एक क्रिया है। एनएएसबी का कहना है, "उन्हें अब *नबी कहा जाता है।*"

अब, यदि आप 1 शमूएल 9:11 के सेप्टुआजेंट अनुवाद पर जाते हैं, तो वहां आपको एक अलग विचार पेश किया जाता है क्योंकि वहां आपके पास है, "समय से पहले लोगों को भविष्यवक्ता, द्रष्टा कहा जाता था।" देखिये, आप कैसे बताते हैं. वह ग्रीक *हा लाओस*[लोग] कहाँ से आता है? समय से पहले "लोग" भविष्यवक्ता को द्रष्टा कहते थे। तो वापस हिब्रू *हयोम पर*। जैसा कि सेप्टुआजेंट अनुवाद हिब्रू से मानता है, *हा योम*[आज] के बजाय, आपके पास *हा आम*[लोग] होता। क्या आप देखते हैं कि इसे कितनी आसानी से भ्रमित किया जा सकता है? " *योम* " में *बस* " *वाउ* " के *स्थान पर* " *अयिन* " का प्रतिस्थापन करें। "मुझे लगता है कि सेप्टुआजेंट शायद वहां जो कुछ हो रहा है उस पर सही प्रकाश डालता है। सेप्टुआजेंट और मैसोरेटिक पाठ को पढ़ने के बीच अंतर यह है कि सेप्टुआजेंट इंगित करता है कि *रोएह* लोगों का अधिक लोकप्रिय पदनाम था। जबकि *नबी* पैगंबर के लिए अधिक तकनीकी या आधिकारिक शब्द था। लोग पहले पैगंबर, द्रष्टा कहते थे। यदि ऐसा मामला है, तो शब्द " *रोएह* " का उपयोग बाद के समय में भी जारी रह सकता है और "पैगंबर" शब्द का उपयोग पहले ही किया जा सकता था जैसा कि हम वास्तव में पाते हैं। और दोनों के बीच कोई बुनियादी अंतर नहीं है. यह अधिक तकनीकी और इसके अधिक लोकप्रिय उपयोग के बीच का अंतर है, न कि पूर्ण अर्थ संबंधी भेदभाव। अतः भविष्यवक्ता द्रष्टा थे। उन्हें परमेश्वर द्वारा यह देखने के लिए बनाया गया था कि उन्हें दूसरों को क्या घोषित करना चाहिए। इसलिए भले ही शब्द " *नबी* " और " *रोहेह* " दोनों का उपयोग किया जाता है, मुझे लगता है कि हम कह सकते हैं कि वे एक ही कार्य के बारे में बात करते हैं। पहले लोग पैगम्बर को द्रष्टा कहते थे।

अब यदि आप उनके बीच अंतर करने जा रहे हैं, तो मुझे लगता है कि इस हद तक यह वैध है। यह कहना कि *नबी* हमें एक ऐसे व्यक्ति को दर्शाता है जो, आप कह सकते हैं, ईश्वर का संदेश सुनाने के लिए लोगों की ओर मुड़ा है ताकि जोर इस बात पर हो कि उसने ईश्वर से क्या प्राप्त किया है। रोह दिखाता है कि एक व्यक्ति भगवान की ओर मुड़ गया है। दूसरे शब्दों में, *नबी* में उद्घोषणा पर अधिक जोर है, *रोएह* में संदेश प्राप्त करने, संदेश देखने पर अधिक जोर है। तो आप कह सकते हैं कि *नबी* उद्घोषणा के सक्रिय कार्य पर अधिक जोर देता है जबकि *रोह* संदेश प्राप्त करने के

निष्क्रिय कार्य पर अधिक जोर देता है। लेकिन भविष्यवक्ता और द्रष्टा के बीच कोई बुनियादी अंतर नहीं है।

छात्र प्रश्न: "द्रष्टा, जिन्हें राजा ने आने और दीवार पर या कुछ और लिखने के लिए कहा है, सपनों और इस तरह की चीज़ों की व्याख्या कैसे करेंगे, वे कैसे भ्रमित नहीं होंगे?" खैर, मुझे लगता है कि आप वहां जो समझ रहे हैं वह यह सवाल है कि आप उन दोनों के बीच अंतर कैसे करते हैं जिन्हें "पैगंबर" कहा जाता है या नहीं। क्या यही है? मुझे लगता है कि यदि आप लोगों को जानते हैं - यदि लोग यशायाह या ओबद्याह या कुछ और को बुला रहे हैं, और वे केवल "द्रष्टा" शब्द का उपयोग कर रहे हैं, तो वे वास्तविक पैगम्बरों को किसी और से कैसे अलग करेंगे कि वे किसी द्रष्टा को बुलाओ? हाँ, वास्तव में यदि आप यशायाह 6:1 को देखें जहाँ यशायाह कहता है, "जिस वर्ष राजा उज्जिय्याह मरा, मैंने प्रभु को देखा।" वहां आपके पास मौखिक रूप है, *राह*। इस प्रकार यशायाह को ईश्वर का दूरदर्शी अनुभव हुआ। उसने प्रभु को देखा। उसे वैध रूप से *नबी* कहा जा सकता है। मुझे लगता है कि *राह/रोह* शब्द का जोर संदेश प्राप्त करने के इस दूरदर्शी साधन पर है। जबकि *नबी* शब्द का जोर दूसरों तक संदेश पहुंचाने पर अधिक है। लेकिन *रोएह* और *नबी* एक ही चीज़ हैं। यह सिर्फ एक अलग पदनाम है। ऐसा प्रतीत होता है कि लोगों के बीच पहले *रोएह* और बाद में *नबी* शब्द का उपयोग करना पसंद किया जाने लगा है। यह कार्य करने वालों के लिए यह तकनीकी लेबल की तुलना में अधिक लोकप्रिय है। लेकिन बाइबिल के अनुसार कोई भेद देखने का कोई कारण नहीं है।

4) आमोस 1:1 आइए आमोस 1:1 को देखें। मैं *ro'eh* ढूंढ रहा था, लेकिन यह संज्ञा के बजाय एक क्रिया है। "तकौआ के चरवाहों में से एक आमोस के शब्द। भूकंप से दो साल पहले उसने इसराइल के बारे में क्या देखा था।" यदि ये आमोस के शब्द हैं, तो आप निम्नलिखित वाक्यांश को पढ़ने के लिए जिस तरह से हम बात करते हैं, उसी तरह से उम्मीद करेंगे, "तकौआ के चरवाहों में से एक, आमोस के शब्द। जलप्रलय से दो वर्ष पहले उसने इस्राएल के विषय में क्या सुना था।" यह नहीं कहता कि यह कहता है "उसने क्या देखा।" ध्यान उस दूरदर्शी प्रकार के स्वागत पर है। यहाँ क्रिया *हाज़ा* है। यह अगला शब्द है जिसे हम देख रहे हैं, जो है "उसने देखा"। एक ही बात है।

इसका अर्थ है "देखना" या "एकटक देखना।" मुझे लगता है कि यहां महत्वपूर्ण बात *नबी को रोह* से अलग करने का इस तरह का प्रयास है क्योंकि बाइबिल के पाठ में दो अलग-अलग प्रकार के व्यक्तियों के बारे में नहीं बताया गया है, वे एक ही हैं।

छात्र प्रश्न: "तो जो कोई राजा के लिए काम करता था उसे भविष्यवक्ता नहीं माना जाता था, बल्कि वह भविष्यवक्ता था या जो भविष्य की भविष्यवाणी करता था, क्या उन्हें द्रष्टा भी कहा जाता था?" नहीं, उन्हें भविष्यवक्ता, भविष्य बताने वाला, या शकुन देने वाला कहा जाएगा। उस प्रकार के व्यक्तियों के लिए अन्य शब्द भी थे।

जी होज़ेह

आइए *होज़ेह की ओर चलें*। मैं *हाज़ा* के बारे में ज्यादा कुछ नहीं कहूंगा। यह क्रिया *हाज़ा से आता है* जैसे *ro'eh* क्रिया *ra'ah* से आता है। और *हाज़ा का* अर्थ है "देखना", या "देखना"। यह वास्तव में रोएह का पर्यायवाची है, इसका उपयोग उसी तरह किया जाता है। *रोएह* की तरह ही, भगवान के रहस्योद्घाटन को प्राप्त करने पर जोर दिया जाता है। इसलिए यदि आप यशायाह 1:1 को देखें, "यहूदा और यरूशलेम के विषय में वह दर्शन जो आमोज़ के पुत्र यशायाह ने यहूदा के राजाओं उज्जियाह, योताम, आहाज और हिजकिय्याह के शासनकाल के दौरान देखा था।" दृष्टि *हेज़ोन* है। यह क्रिया *हाज़ा से व्युत्पन्न एक संज्ञा* है। यशायाह ने जो दर्शन देखा, वह *हज़ोन* है। तो आप यशायाह को *होज़े* के साथ-साथ *नबीया रोएह भी* कह सकते हैं। मेरा मतलब है, ये सभी शब्द एक दूसरे के स्थान पर उपयोग किये जाते हैं।

3. इज़राइल में पैगम्बरवाद की उत्पत्ति

चलिए तीन पर चलते हैं। "इज़राइल में पैगम्बरवाद की उत्पत्ति।" आप तीन उप-बिंदुओं पर ध्यान दें। ए है, "अन्य राष्ट्रों में इज़राइल के भविष्यवक्तावाद की कथित उपमाएँ।" बी. है, "भविष्यवाणी की उत्पत्ति के लिए आंतरिक इज़राइली स्पष्टीकरण," और सी. है, "मैं जो सोचता हूं वह भविष्यवक्तावाद की बाइबिल व्याख्या है।" तो सबसे पहले, हम बी और सी की तुलना में ए पर अधिक समय बिताना चाहते हैं।

ए. इज़राइल में इज़राइल पैगम्बरवाद की कथित उपमाएँ

ए है, "अन्य राष्ट्रों में इज़राइल के भविष्यवक्तावाद की कथित उपमाएँ।" आप साहित्य में पाएंगे कि यह कहा गया है कि इज़राइल में अन्य लोगों और प्राचीन निकट पूर्व के देशों में भविष्यवाणियों में समानताएं पाई जा सकती हैं। फिर आम तौर पर ऐसा होता है कि विद्वान इज़राइल में पैगम्बरवाद की घटना को इज़राइल के बाहर की इन घटनाओं के व्युत्पन्न के रूप में समझाने का प्रयास करते हैं ताकि इज़राइल के भविष्यवक्ताओं की उत्पत्ति को इज़राइल के बाहर पाए जाने वाले अनुरूप घटनाओं द्वारा समझाया या समझाया जा सके।

औपचारिक समानताएँ

अब, इस बारे में कुछ टिप्पणियाँ। मेरा मानना है कि शुरू से ही, हमें ईमानदार, स्पष्ट और खुला रहना होगा और कहना होगा कि हम इस बात से इनकार नहीं कर सकते हैं कि हम इज़राइल में जो पाते हैं और अन्यत्र पैगम्बरवाद की घटनाओं के बीच "औपचारिक समानताएं" कह सकते हैं। वास्तव में जब आप इसके बारे में सोचते हैं तो इज़राइल में बहुत सारे रीति-रिवाज, धार्मिक संस्थान और प्रथाएं हैं जो अन्य लोगों के बीच औपचारिक समानताएं रखती हैं। लेकिन मुझे यकीन नहीं है कि यह कहना बहुत कुछ कहता है। भले ही औपचारिक समानताएं हों, सवाल यह है: क्या यह कहने का आधार देता है कि इज़राइल और आसपास के देशों में हम जो पाते हैं, उसके बीच किसी प्रकार का आंतरिक संबंध या लिंक है? इज़राइल में भविष्यसूचक कार्य की प्रकृति के बारे में हम जो पहले ही कह चुके हैं, उसे ध्यान में रखते हुए, मुझे ऐसा लगता है कि यदि ये ईश्वर द्वारा चुने गए लोग हैं जिनके माध्यम से वह अपने लोगों को अपना वचन उनके मुंह में डालकर देगा, तो इज़राइल में जो चल रहा है और जो हम अन्य लोगों के बीच पा सकते हैं, उनके बीच किसी भी प्रकार के आंतरिक संबंध के बारे में बात करना कुछ ऐसा होगा जो अत्यधिक संदिग्ध होगा। मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि व्युत्पत्ति के बारे में बात करना एक ऐसी चीज़ है जिसे भविष्यवाणी शास्त्र के आधार पर बाहर रखा जाएगा। लेकिन ऐसा कहने के बाद, यह भी बहुत स्पष्ट है कि भगवान मनुष्यों से बात करते हैं, जिसमें पुराने नियम के काल में उनके लोग इज़राइल भी शामिल हैं, उन लोगों की संस्कृति, संस्थानों, विचार रूपों के संदर्भ में जिनसे वह बात कर रहे हैं। जब आप पुराने नियम को देखते हैं, तो आपको पुराने नियम में कई घटनाएं मिलेंगी जिनके लिए आप इज़राइल के बाहर

औपचारिक उपमाएँ पा सकते हैं। पुराना नियम बलिदान लाने के नियमों से भरा हुआ है। अन्य प्राचीन लोग अपने धार्मिक अनुष्ठान में बलि का प्रयोग करते थे। पुराने नियम की वाचा का चिन्ह खतना था। अन्य प्राचीन लोग खतना का अभ्यास करते थे। पुराने नियम के संदर्भ में खतना ने एक बहुत ही विशिष्ट महत्व या अर्थ प्राप्त कर लिया है, लेकिन यह प्राचीन दुनिया में कुछ अज्ञात नहीं था।

की पूरी अवधारणा के बारे में सोचें जो अंतरराष्ट्रीय संबंधों को नियंत्रित करने वाली संधि की अवधारणा पर स्पष्ट रूप से ढाली गई प्रतीत होती है, जो हिती संधि के रूप हैं। बाइबिल अनुबंध प्रपत्र हिती संधि प्रपत्र के आसपास ढाला गया है। ईश्वर मानवीय कानूनी रिश्तों का एक साधन लेता है और इसका उपयोग उस रिश्ते की संरचना के लिए करता है जिसे वह अपने और अपने लोगों के बीच स्थापित करता है, यह बहुत अच्छी बात है।

बस राजत्व का विचार लीजिए। इज़राइल, एक निश्चित समय पर, अपने राजा के रूप में ईश्वर से संतुष्ट नहीं था; वे चारों ओर के राष्ट्रों के समान एक मानव राजा चाहते थे। यहोवा ने शमूएल से कहा, “उन्हें एक राजा दो।” इस प्रकार इस्राएल के पास चारों ओर की जातियों के समान एक राजा था। हालाँकि, योग्यता के साथ जब भगवान ने सैमुअल से उन्हें एक राजा देने के लिए कहा तो सैमुअल ने राजत्व के तरीके का वर्णन किया। 1 शमूएल 10:25 में, इस्राएल के राजा की भूमिका और कार्य उसके आसपास के राष्ट्रों से काफी भिन्न थे। तो आपमें समानता और अंतर था। इस्राएल का एक राजा था, लेकिन वह ऐसा राजा नहीं था जो उसी तरह कार्य करता था जैसे इस्राएल के बाहर के राजा करते थे।

इस्राएल का एक याजक था। अन्य प्राचीन लोगों के पास पुजारी थे। तो यदि अन्य प्राचीन लोगों के पास भविष्यवक्ता थे तो इस्राएल में भविष्यवक्ता क्यों नहीं होना चाहिए, लेकिन उनके बीच आवश्यक अंतर क्या हैं? जिस तरह से पैगम्बर ने इसराइल में कार्य किया और जिस तरह से पैगम्बर ने इसराइल के बाहर कार्य किया वह अलग था। इसलिए यदि आप इज़राइल के बाहर एक औपचारिक, मैं कह रहा हूँ औपचारिक, भविष्यवाणी समारोह के संबंध में इज़राइल में जो कुछ भी आप पाते हैं, उसके अनुरूप पा सकते हैं, तो मुझे नहीं लगता कि यह किसी भी तरह से इज़राइल के पैगंबरों की विशिष्टता को कम करता है। हाँ, अन्य लोगों के पास भविष्यवक्ता थे, लेकिन इज़राइल में, कुछ अलग है। इज़राइल में पैगम्बरवाद की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि

इज़राइल में, पैगंबर अपने विचार नहीं बोलते हैं, वे अपने शब्द नहीं देते हैं। वह सीधे एकमात्र सच्चे ईश्वर द्वारा उसे दिया गया संदेश देता है। इसलिए जब आप इज़राइल के बाहर भविष्यवक्तावाद की समानता और इज़राइल में जो पाते हैं, उसके बारे में प्रश्न पूछते हैं, तो मुझे लगता है कि आपको इसे ध्यान में रखना होगा।

लेकिन ऐसा कहने के बाद भी, मुझे लगता है कि अगला सवाल यह हो जाता है, "इजरायल के बाहर भविष्यवक्तावाद के किसी प्रकार के औपचारिक सादृश्य के लिए किस तरह का सबूत है अगर यह इसके सार में यह आंतरिक गुण नहीं है जहां भगवान अपने शब्दों को रख रहे हैं इन व्यक्तियों का मुँह?" पैगम्बरवाद की इस घटना के लिए हमें प्राचीन विश्व में किस प्रकार के औपचारिक प्रमाण मिलते हैं? अपनी रूपरेखा पर ध्यान दें, मेरे पास मेसोपोटामिया की उपमाएँ, मिस्र की उपमाएँ, कनानी उपमाएँ और एक निष्कर्ष है

1) मेसोपोटामिया सादृश्य

पहला है मेसोपोटामिया उपमाएँ। मेसोपोटामिया उपमाओं के लिए सबसे महत्वपूर्ण अतिरिक्त बाइबिल पाठ वे पाठ हैं जो मारी नामक स्थान पर पाए गए थे जो ऊपरी मेसोपोटामिया में बेबीलोन के आसपास है। हम्मुराबी के समय से पहले यह एक समृद्ध शहर था। हम्मुराबी लगभग 1700 ईसा पूर्व में रहते थे, इसलिए यह काफी प्रारंभिक है। हम्मुराबी पर कब्ज़ा होने से ठीक पहले के समय में वहां का शासक ज़िमरी लिम के नाम से जाना जाता था। मारी की खुदाई में एक संग्रह में लगभग 5,000 कीलाकार गोलियाँ मिली हैं। उनमें से कुछ को मेसोपोटामिया में जिसे वे पैगम्बरवाद कहते हैं, उसके निशान मिलते हैं। यदि आप उस हैंडआउट पर अक्षर ए को देखते हैं, तो अक्काडियन पत्रों के तहत पहला पाठ, आपको "दिव्य रहस्योद्घाटन" शीर्षक दिखाई देगा। यह सामग्री प्रिचर्ड के *प्राचीन निकट पूर्वी ग्रंथों से ली गई है* जिसे आमतौर पर संक्षिप्त रूप में ANET कहा जाता है। यह प्रिंसटन यूनिवर्सिटी प्रेस द्वारा प्रकाशित, जेम्स प्राइसहार्ड द्वारा संपादित प्राचीन निकट पूर्व के अतिरिक्त-बाइबिल ग्रंथों का मानक अंग्रेजी भाषा अनुवाद है।

क) मारी के ज़िमरी लिम को इटोरस्तु का एक पत्र

वहां का पहला पाठ ज़िमरी लिम को इटोरस्तु का एक पत्र है, जो मारी का राजा था। मुझे पाठ पढ़ने दें और उस पर कुछ टिप्पणियाँ करने दें। इसमें लिखा है, "मेरे प्रभु से बात करो। इस

प्रकार इटोरस्तु आपका सेवक। जिस दिन मैंने अपनी यह गोली अपने स्वामी, मलाक डैगन को भेजी, शॉटगा का एक आदमी आया और मुझसे इस प्रकार बोला, 'मेरे एक सपने में, मैं सिगारिकोन के किले के एक अन्य व्यक्ति की कंपनी में जाने के लिए तैयार था। मारी के ऊपरी जिले में। अपने रास्ते में, मैंने तुर्का में प्रवेश किया और प्रवेश करने के ठीक बाद, मैं दागोन के मंदिर में प्रवेश किया और साष्टांग प्रणाम किया। जब मैं साष्टांग झुक रहा था, दागोन ने अपना मुंह खोला और मुझसे इस प्रकार बोला, "क्या अम्मोनियों के राजाओं और उनकी सेनाओं ने जिम्री लिम की सेनाओं के साथ सन्धि कर ली है?" मैंने कहा, "उन्होंने शांति स्थापित नहीं की।" मेरे बाहर जाने से ठीक पहले, उन्होंने मुझसे इस प्रकार बात की, 'जिमरी लिम के दूत लगातार मेरी उपस्थिति में क्यों नहीं रहते हैं और वह अपनी पूरी रिपोर्ट मेरे सामने क्यों नहीं रखते? यदि ऐसा किया गया होता, तो मैंने बहुत पहले ही अम्मोनियों के राजाओं को जिम्री लिम के अधिकार में दे दिया होता। अब जाओ, मैं तुम्हें भेजता हूँ। तू जिम्री लिम से इस प्रकार कहना, "अपने दूतों, मेरे पास भेजो। अपना पूरा विवरण मेरे सामने लाओ और तब मैं अम्मोनियों के राजाओं को मछुआरे की छड़ी पर पकाकर तुम्हारे आगे रख दूंगा। "" यह उद्धरण का अंत है। "यह वही है जो इस आदमी ने अपने सपने में देखा और फिर मुझे बताया। अब मैं अपने प्रभु को लिखता हूँ। मेरे प्रभु को इससे निपटना चाहिए। इसके अलावा, यदि मेरा प्रभु चाहे, तो मेरा स्वामी अपना पूरा विवरण दागोन के सामने रखे, और मेरे प्रभु के दूत दागोन के मार्ग में निरन्तर चलते रहें। जिस व्यक्ति ने मुझे यह स्वप्न बताया था, उसे दागोन के लिये बलिदान चढ़ाना था। और इसलिए मैंने उसे आगे नहीं भेजा। इसके अलावा, चूँकि यह आदमी भरोसेमंद था, इसलिए मैंने उसका कोई बाल या उसके परिधान की झालर नहीं काटी।"

तो, इटोरस्तु का कहना है कि जिस दिन उसने यह पत्र लिखा था, उस दिन शॉटगा का एक व्यक्ति था, जिसका नाम मलाक डैगन था, जो संदेश लेकर उसके पास आया था। मैलाक डैगन का कहना है कि उसने किसी दूसरे आदमी की संगति में जाने के बजाय सपने में सपना देखा था। सपने में, वह और यह दूसरा व्यक्ति तुर्का गए, जो कि मारी के पास एक जगह है, और दागोन नाम के एक देवता के मंदिर में गए, शायद वही दागोन जिसका उल्लेख पुराने नियम में पलिशितियों के देवता के रूप में किया गया था। लेकिन पत्र में कहा गया है कि जब मलाक डैगन मंदिर में गया, तो उसके सपने में भगवान ने उससे एक सवाल पूछा, "क्या अम्मोनियों के राजाओं ने जिमरी लिम की सेना के

साथ शांति स्थापित की थी?" संभवतः ज़िमरी लिम के सैनिकों और अम्मोनियों कहे जाने वाले इन लोगों के बीच झड़पें हुई थीं। जब मैलाक डैगन नकारात्मक उत्तर देता है, तो भगवान कहते हैं, "ज़िमरी लिम के दूत मुझ पर निरंतर उपस्थित क्यों नहीं रहते? वे मुझे पूरी रिपोर्ट क्यों नहीं देते? यदि उन्होंने ऐसा किया होता, तो मैं इन लोगों, अम्मोनियों, को ज़िमरी लिम के अधिकार में दे देता।" और फिर वह कहता है, अब जा, मैं तुझे भेजता हूँ, तू ज़िमरी लिम से इस प्रकार कहना, कि अपने दूत मेरे पास भेज। अपनी पूरी रिपोर्ट मेरे सामने रखो, और मैं इन अम्मोनियों को मछुआरे की लाठी पर पकाऊंगा।"

इसलिए इटोरस्तु ने ज़िमरी लिम को बताया कि इस मलैक डैगन ने अपने सपने में क्या देखा था, उसने उसे डैगन के निर्देशों का पालन करने की सलाह दी। अब, कुछ लोग मलाक डैगन में इज़राइल के भविष्यवक्ताओं के साथ एक सादृश्य देखते हैं और उन्होंने इसे इस तरह से स्थापित किया: मलैक डैगन देवता से एक संदेश देता है जिसे ज़िमरी लिम को मानना चाहिए था और इज़राइल के पैगंबर अक्सर देवता यहोवा से संदेश देते थे एक राजा के लिए जिसकी उसे आज्ञा माननी थी। हालाँकि इस बिंदु पर, हम बाद में इस पर वापस आएंगे, लेकिन इस बिंदु पर मुझे लगता है कि यह ध्यान देने योग्य है कि मैलाक डैगन सीधे तौर पर ऐसा नहीं करता है। मैलाक डैगन आई टोरास्तु को संदेश देता है और इटोरस्तु इसे एक पत्र, एक टैबलेट के माध्यम से राजा तक पहुंचाता है, इसे लिखता है, उसे भेजता है। इसलिए कुछ समानताएं और भिन्नताएं भी हैं।

बी) मैरी के ज़िमरी लिम को किदरी डैगन का एक पत्र

आइए पाठ बी पर चलते हैं, जो किदरी डैगन का ज़िमरी लिम को लिखा एक पत्र है। यह एक संक्षिप्त पाठ है। इसमें लिखा है, "इसके अलावा जिस दिन मैंने अपनी यह गोली अपने स्वामी को भेजी, डैगन का एक परमानंद आया और उसने मुझे इस प्रकार संबोधित किया।" यह परमानंद के लिए *महु* शब्द है। यह डैगन का परमानंद है। अनुवाद "परमानंद" व्युत्पत्ति और सामान्य उपयोग पर आधारित है, लेकिन मारी सामग्री असाधारण मानसिक स्थिति का कोई सबूत नहीं देती है। "डैगन का यह परमानंद आया और मुझे इस प्रकार संबोधित किया, 'भगवान ने मुझे सीधे राजा के पास भेजा है कि वे यदु लिम की छाया के लिए मुर्दाघर की बलि चढ़ाएं।' परमानन्द ने मुझसे यही कहा। इसलिए, मैंने अपने प्रभु को लिखा है कि मेरे स्वामी वही करें जो उन्हें पसंद हो।" अब किदरी

डैगन ने यह पत्र ज़िमरी लिम को भेजा। वह मारी के निकट एक स्थान का राज्यपाल था। और वह कहता है कि यह परमानंद उसके पास यह संदेश लेकर आया था, "राजा को लिखो कि वे यदु लिम की छाया के लिए मुर्दाघर की बलि चढ़ाएँ।" यदु लिम ज़िमरी लिम का पिता था, इसलिए राजा का पिता था। ऐसा लगता है कि ज़िमरी लिम अपने मृत पिता की आत्मा के लिए प्रसाद लाने में विफल रहा था। तो किदरी डैगन को यह संदेश अति उत्साह से मिलता है और वह यह संदेश राजा तक पहुंचा देता है। आपने देखा कि आखिरी पंक्ति में वह राजा को सलाह देता है, "आपको ऐसा करना चाहिए।" लेकिन फिर वह कहता है, "मेरे प्रभु को वही करने दो जो उसे अच्छा लगे।"

सी। मारी के ज़िमरी लिम को परमानंद पाठ

आपकी रूपरेखा पर C. आपके हैंडआउट पर G. है। मैं वह सब नहीं पढ़ूंगा लेकिन यह एक टूटी हुई गोली है; बीच में एक अंतराल है और ऐसा लगता है कि यह एक उत्साहपूर्ण कहावत के संदेश की चिंता करता है कि ज़िमरी लिम को आने वाले महीने के 13^{वें} दिन देवता के लिए एक भेंट लानी थी - शायद वही भेंट जो पिछले पाठ में उल्लिखित थी। आपने देखा कि इसका अंत कैसे होता है। "मेरे स्वामी जैसा चाहें वैसा ही करें।"

डी. किदरी डैगन का एक और पत्र

आपकी रूपरेखा का D. आपके हैंडआउट पर F. है। परमानंद के संदर्भ में किदरी डैगन का एक और पत्र। तो यह परमानन्द यहाँ पहले आ गया। लेकिन इसे समझना कठिन है। ऐसा लगता है कि संदेश शहर के द्वार के निर्माण से संबंधित है। गेट के बारे में वास्तव में क्या कहा गया है, यह इतना स्पष्ट नहीं है। कुछ लोग कहते हैं कि गेट बनाने के निर्देश दिए गए हैं। दूसरों का कहना है कि यह इसे न बनाने की चेतावनी है, लेकिन यह एक परमानंद है जो एक संदेश प्रकट करता है जो शहर के द्वार के संबंध में राजा को दिया जाना है।

ई. मेसोपोटामिया उपमाओं के संबंध में निष्कर्ष

ई: "मेसोपोटामिया उपमाओं से संबंधित निष्कर्ष।" यहीं पुस्तकों और लेखों की एक सूची है। उस साहित्य में, कई लोगों ने तर्क दिया है कि इन ग्रंथों के उत्साह और पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं के बीच, रूप और सामग्री दोनों में समानताएं हैं। आइए इनमें से कुछ पर नजर डालें। जहाँ तक रूप में समानता की बात है, तो यह तर्क दिया जाता है कि जिस प्रकार इज़राइल में

एक भविष्यवक्ता को अपना संदेश प्रभु, यहोवा से प्राप्त हुआ, उसी प्रकार मारी में परमानंद को अपना संदेश डैगन से प्राप्त हुआ। यह काफी उचित है। यह एक औपचारिक समानता है। दूसरे, जैसे इसराइल में भविष्यवक्ता अपना संदेश बिना पूछे ही दैवीय अधिकार के साथ राजा के पास भेज देते थे, वैसे ही मारी में भी इस उत्साह के साथ संदेश राजा के पास बिना मांगे भेज दिया जाता था। राजा ने सन्देश नहीं माँगा। इस बात का पहले से कोई निर्धारण नहीं है कि राजा संदेश सुनना चाहेगा या नहीं। उन्हें संदेश दिया गया, इसलिए एक और समानांतर। तीसरा, जैसे इज़राइल में पैगंबर अक्सर राजा के कार्यों की आलोचना करते हैं, वैसे ही यहां मारी में उत्साह के साथ आलोचना होती है। “आपने मुझे सूचित क्यों नहीं किया? तुमने बलि क्यों नहीं दी? आपको होना चाहिए।” तो इन्हें आप औपचारिक समानताएँ कह सकते हैं: रूप में समानताएँ।

सामग्री में समानता के बारे में क्या? कुछ लोगों ने तर्क दिया है कि उस पहले पाठ में आपको पुराने नियम में मुक्ति की भविष्यवाणी के बराबर कुछ मिलता है। दूसरे शब्दों में, “यदि आपने मुझे सूचित किया होता (आप नीचे 2, 4, 6 पंक्तियों में देखेंगे), यदि ऐसा किया गया होता, तो मैं गया होता और राजाओं और अम्मोनियों को जिम्मी लिम के अधिकार में सौंप दिया होता।” तो यह पुराने नियम में मुक्ति की भविष्यवाणी के समानांतर है। उस पहले पाठ से लगभग 8 पंक्ति नीचे एक दूसरी समानता भी मिलती है। “अब जाओ, मैं तुम्हें भेजता हूँ। इस प्रकार आप जिम्मी लिम से बात करेंगे। यिर्मयाह 1:7 के समान, “जिस किसी के पास मैं तुझे भेजूं उसके पास जाना, और जो कुछ मैं आज्ञा दूँ वही कहना।” “अब जाओ, बोलो।” तो मुझे लगता है कि उस स्तर पर आप कह सकते हैं, “हां, मारी सामग्री और पुराने नियम के बीच स्वरूप में कुछ समानताएं हैं और यहां तक कि सामग्री में कुछ हल्की समानताएं भी हैं।” लेकिन ऐसा कहने के बाद, मुझे लगता है कि यह नोटिस करना बहुत महत्वपूर्ण है कि ऐसा नहीं किया गया है। कुछ बहुत महत्वपूर्ण अंतर भी हैं। मैं उनमें से कुछ का उल्लेख करना

चाहता हूँ। 1) पहला पाठ, मैलाक डैगन

सबसे पहले, उस पहले पाठ में, मलैक डैगन, जिसने वह संदेश प्राप्त किया था, सीधे राजा के पास नहीं जाता है। वह राजा के एक हाकिम के पास जाता है; वह इटोरस्तु जाता है। यह इटोरस्तु ही है जो संदेश को एक टेबलेट पर रखता है और राजा को भेजता है। तो, आप कह सकते हैं, संदेश

प्राप्त करने वाले भविष्यवक्ता और उसे राजा तक पहुंचाने वाले व्यक्ति के बीच एक मध्यस्थ है। वहां एक तीसरा पक्ष है। अन्य तीन पत्रों में, परमानंद किदरी डैगन के पास जाता है जो संदेश को लिखित रूप में राजा तक पहुंचाता है। अतः दूसरे शब्दों में कहें तो इन सभी ग्रंथों में अप्रत्यक्ष रूप से किसी तीसरे पक्ष के माध्यम से संदेश राजा तक पहुंचता है। पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं के लिए यह प्रथा है कि वे अपना संदेश सीधे राजा तक पहुँचाएँ। इसका एक उत्कृष्ट उदाहरण एलिय्याह है जो अहाब का सामना करता है। वह बस बाहर जाता है और उसका सामना करता है। या यशायाह, जो बाहर जाता है और सीधे आहाज का सामना करता है।

2) दो गोलियाँ एक प्रभावशाली वक्तव्य के साथ समाप्त होती हैं

दूसरे, दो गोलियाँ एक आश्चर्यजनक कथन के साथ समाप्त होती हैं। हैंडआउट में यह ई और जी है। ई. संदेश दिए जाने के बाद इस कथन के साथ समाप्त होता है, "मेरे स्वामी को वह करने दें जो उन्हें प्रसन्न करता है", और जी., "मेरे स्वामी उनके विचार-विमर्श के अनुसार ठीक हों जो उन्हें प्रसन्न करता है।" तो उनमें से दो गोलियाँ इस प्रकार के कथन के साथ समाप्त हुईं। इस प्रकार की योग्यता संदेश की ताकत और अधिकार को कम कर देती है। संदेश यही है, लेकिन जो चाहो करो। यह निश्चित रूप से इसे पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं के संदेश से अलग करता है। पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं ने कभी भी प्रभु की ओर से उस प्रकार की योग्यता के साथ कोई संदेश नहीं दिया।

3) मारी पाठ में संदेश नैतिक या आध्यात्मिक वास्तविकताओं से संबंधित नहीं है

तीसरा, मारी पाठ में संदेश का ध्यान नैतिक या आध्यात्मिक वास्तविकताओं से संबंधित नहीं है, बल्कि केवल बाहरी सांस्कृतिक दायित्वों से संबंधित है। "यह बलिदान चढ़ाओ," "क्या हो रहा है इसके बारे में मुझे एक रिपोर्ट दो।" मारी पाठ का संदेश नैतिक या आध्यात्मिक वास्तविकताओं से संबंधित नहीं है, केवल बाहरी सांस्कृतिक दायित्वों से संबंधित है। यह पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं के संदेश से बहुत भिन्न है जिनकी प्राथमिक चिंता राजा और लोगों की नैतिक और आध्यात्मिक स्थिति से थी। मैं उस पर थोड़ा विस्तार करना चाहता हूँ, लेकिन मैं पहले ही ओवरटाइम कर चुका हूँ इसलिए मुझे रुकना होगा। लेकिन आइए हम इसे अपने अगले सत्र की शुरुआत में

उठाएँ और वहाँ से आगे बढ़ें।

क्रिस्टा वॉल्श द्वारा लिखित
टेड हिल्डेब्रांट द्वारा रफ संपादन
केटी एल्स द्वारा अंतिम संपादन,
टेड हिल्डेब्रांट द्वारा पुनः सुनाया गया